



ISSN 2277-4157

Central India Journal of Historical and Archaeological Research

CIJHAR

A Peer Reviewed And
An International Journal

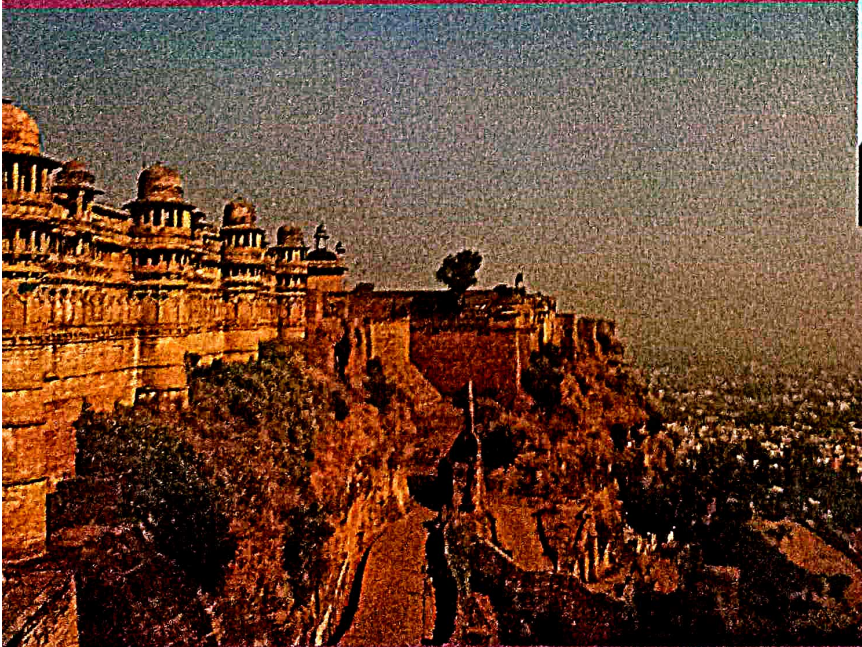
Vol. 6

April-June 2017

No. 22

Editor

Dr. Vinay Shrivastava



**Central India Journal of
Historical And
Archaeological
Research
(CIJHAR)**

**A Peer Reviewed Journal
An International Journal**

**Volume VI,
Number 22
April-June, 2017**

**Editor
Dr. Vinay Shrivastava**

**Vidya Career Research Foundation
Panna-488001**

Registration No. 06/11/01/10381/14

- 38 जन चेतना में गुरु घासीदास का योगदान : छत्तीसगढ़ के संदर्भ में 184
पी. डी. सोनकर
- 39 छत्तीसगढ़ के बस्तर उपांचल (सम्भाग) क्षेत्र की लोहार जाति का सामाजिक, 190
आर्थिक, तथा सांस्कृतिक योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन
करुणा देवांगन
- 40 ब्रिटिश कालीन भारतीय समाज में सती प्रथा एक अध्ययन 195
डॉ. प्रीति बागडे
- 41 पूर्व मध्यकालीन ग्रामीण समुदाय का सांस्कृतिक परिदृश्य 200
कविता
- 42 हरियाणा में आधुनिक शिक्षा का विकास 204
मनीषा
- 43 भील क्रान्ति के प्रणेता : श्री मोतीलाल तेजावत 210
हरीश राव
- 44 चम्पारण सत्याग्रह के समय समाचार-पत्रों की भूमिका 215
संजीत कुमार

सम समायिक इतिहास

- 45 कुमाऊनी लोककला एवं लोकविश्वास में नागप्रभाव 217
डॉ. अवनीन्द्र कुमार जोशी

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

- 46 नेपाल संविधान और माओवादी गतिविधियाँ 221
शोभा कुमारी

Book Review

- 47 काकोरी से पहले काकोरी के बाद (1857-1942) 225
डॉ. विनय श्रीवास्तव

ब्रिटिश कालीन भारतीय समाज में सती प्रथा एक अध्ययन

*डॉ. प्रीति बागडे

सारांश

सती का अर्थ सत्यवती है जो की पतिव्रता और चरित्रवती स्त्री है किन्तु एक विचित्र प्रक्रिया से जिसका अर्थ पतिव्रता स्त्रियों द्वारा अपने स्वामियों के मृत शरीरों के साथ जल जाने की प्रथा हो गया था। धर्म ग्रंथों ने चरित्रवती स्त्रियों के लिये अपने स्वामी की चिता पर जल मरना ही एक मात्र पुण्य कर्म ठहराया। स्वभावतः सैकड़ों स्त्रियाँ धर्म के नाम पर सती होने लगी। मुस्लिम काल में हिंदू स्त्रियाँ अपने आप को असुरक्षित समझती थी। अतः अपनी सम्मान की रक्षा के लिये सती होना श्रेयस्कर समझती थी। वेलेजेली के उत्तराधिकारी लॉर्ड मिंटो ने सती की प्रथा को रोकने का प्रयास किया। 12 जून 1823 में कंपनी के संचालको ने सती प्रथा के सम्बन्ध में जाँच के आदेश दिये थे और इस बात की और सन्केत किया। इस प्रथा का अन्त करने के लिये राजा राम मोहन राय तथा देवेन्द्रनाथ टैगोर आदि समाज सुधारको ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, तथा इस प्रथा को अमानवीय बताते हुए गैर कानूनी घोषित करने की मांग की। गर्वनर जनरल बैन्टिक ने 47 वे रेगुलेशन के द्वारा 4 दिसम्बर 1829 ई. को बंगाल में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित कर दिया।

हिंदू संस्कृति के अनुसार सती के दो रूप होते थे, प्रथम सहमरण इसमें स्त्री मृत पति की चिता में ही जल जाती थी।¹ द्वितीय अनुमरण में पति की मृत्यु के बाद अनुगामिनी के रूप में जल जाती थी। सती शब्द सत् से बना है जिसका अर्थ सत्य है अर्थात् सती का अर्थ सत्यवती है जो की पतिव्रता और चरित्रवती स्त्री है किन्तु एक विचित्र प्रक्रिया से जिसका अर्थ पतिव्रता स्त्रियों द्वारा अपने स्वामियों के मृत शरीरों के साथ जल जाने की प्रथा हो गया था।² सती शब्द का उल्लेख पुराणों में उल्लिखित एक कथा में किया गया है। भगवान शिव की पत्नी का नाम सती था, जिन्हें देवी सती के नाम से पुकारा जाता था। देवी सती ने अपने पिता दक्ष द्वारा अपने पति भगवान शिव के तिरस्कार से व्यथित हो यज्ञ की अग्नि में कूदकर आत्मदाह कर लिया था। जबकि सती प्रथा में पति की मृत्यु

Note- Research Paper Received in December 2016 and Reviewed in February 2017

*सहा. प्राध्यापक इतिहास विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)